eISSN- 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 01, Issue 01, October 2024

मुक्तिबोध और कामायनी

श्री गोपाल सिंह[1]
[1]असि. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, श्रीगांधी महाविद्यालय सिधौली सीतापुर उ0प्र0

Received: 20 Oct 2024 Accepted & Reviewed: 25 Oct 2024, Published : 31 Oct 2024

Abstract

प्रगतिवादी काव्य धारा के प्रमुख स्तंभ मुक्तिबोध अपने आलोचना कर्म का आरंभ कामायनी से करते हैं जबकि उस दौर में कामायनी और छायावाद का विरोध करना तथा उसका मखौल उड़ाना प्रगतिवादी आलोचना कि एक सामान्य प्रवृत्ति बनती जा रही थी। कामायनी पर मुक्तिबोध की आलोचनात्मक कृति 'कामायनी एक पुनर्विचार' का प्रकाशन 1961 ई॰ में हुआ। कि कामायनी की व्याख्या और विश्लेषण उन्होंने आधुनिक संदर्भ में की है और इस प्रक्रिया में कामायनी के संबंध में अन्य समीक्षकों की मान्यताओं से काफी हटकर अनेक नई स्थापनाएं मुक्तिबोध करते हैं। उदाहरण के लिए कामायनी को ध्वस्त होते सामंतवादी प्रवृत्तियों के प्रतीक रूप में देखना, कामायनी की व्याख्या एक भाववादी रचना के रूप में करना, कामायनी को पूँजीवादी व्यक्तिवाद से जोड़ना तथा प्रसाद के अभिमत से पृथक कामायनी को वैदिक इतिहास न मानकर उसकी व्याख्या फैंटेसी के रूप में करना इत्यादि। लेकिन मुक्तिबोध की समस्या यह है कि वह एक आध्यात्मिक कृति का मूल्यांकन निरी भौतिकवादी वैचारिकी के आधार पर करते हैं। और अपनी मार्क्सवादी विचारधारा को त्रुटि रहित और अंतिम सत्य के रूप में स्वीकार कर लेते हैं। यह सत्य है कि मार्क्सवाद ने मानवीय समता और मानव हितों को सर्वोपरि रखा किंतु इस विचारधारा की भी अपनी सीमाएं हैं। अंततः हम कह सकते हैं कि कामायनी के पुनर्मूल्यांकन की जिस परंपरा का आरंभ मुक्तिबोध ने किया वह कामायनी की समीक्षा को एक नई दिशा प्रदान करती है।

बीज शब्द – अभेदानुभूतिशीलता, अद्वैतवाद, प्रगतिशील, वर्गभेद, आत्मपरक काव्य, भौतिकवादी वैचारिकी

Introduction

यह अपने आप में बड़ा रोचक है कि प्रगतिवादी काव्य धारा के प्रमुख स्तंभ मुक्तिबोध अपने आलोचना कर्म का आरंभ कामायनी से करते हैं जबकि उस दौर में कामायनी और छायावाद का विरोध करना तथा उसका मखौल उड़ाना प्रगतिवादी आलोचना कि एक सामान्य प्रवृत्ति बनती जा रही थी। कामायनी की समीक्षा संबंधी मुक्तिबोध का समीक्षा ग्रंथ कामायनी एक पुनर्विचार मुक्तिबोध के जीवन काल में प्रकाशित उनकी चुनिंदा कृतियों में से एक है। यह इस बात का प्रमाण है कि कामायनी को लेकर मुक्तिबोध कितना गंभीर हैं। कामायनी पर मुक्तिबोध की आलोचनात्मक कृति 'कामायनी एक पुनर्विचार' का प्रकाशन 1961ई० में हुआ। उक्त पुस्तक में ही कुछ संशोधन करके कुछ नए अध्यायों को जोड़कर बाद में एक दूसरी पुस्तक उन्होंने तैयार की जो कामायनी एक पुनर्विचार शीर्षक से हम सबके समक्ष है। इस पुस्तक में मुक्तिबोध ने आरंभ में ही यह स्पष्ट कर दिया है कि कामायनी का विश्लेषण करने से पहले उन्होंने जयशंकर प्रसाद और उनके युग को समग्रता में समझने का प्रयास किया है। उनके शब्द हैं– ''कामायनी का जो विश्लेषण मैंने किया है,वह एक ओर प्रसाद जी का युग तो दूसरी ओर उनका व्यक्तित्व– इन दोनों की परस्पर क्रिया प्रतिक्रियाओं के संघनित योग को ध्यान में रखकर ही।[1]

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2024

eISSN- 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 01, Issue 01, October 2024

मुक्तिबोध के उपर्युक्त कथन से ही स्पष्ट है कि कामायनी की व्याख्या और विश्लेषण उन्होंने आधुनिक संदर्भ में की है और इस प्रक्रिया में कामायनी के संबंध में अन्य समीक्षकों की मान्यताओं से काफी हटकर अनेक नई स्थापनाएं मुक्तिबोध करते हैं। उदाहरण के लिए कामायनी को ध्वस्त होते सामंतवादी प्रवृत्तियों के प्रतीक रूप में देखना ,कामायनी की व्याख्या एक भाववादी रचना के रूप में करना, कामायनी को पूँजीवादी व्यक्तिवाद से जोड़ना तथा प्रसाद के अभिमत से पृथक कामायनी को वैदिक इतिहास न मानकर उसकी व्याख्या फैंटेसी के रूप में करना इत्यादि। नंददुलारे वाजपेयी और डॉ. नगेंद्र के विपरीत मुक्तिबोध का कहना है कि श्री जयशंकर प्रसाद में वैज्ञानिक इतिहास दृष्टि का अभाव था। वे प्रसाद को अतीत का गौरव–गान करने वाला तथा पुनरुत्थानवादी सांस्कृतिक चेतना से युक्त कवि बताते हैं। उनका कथन है –''प्रसाद जी के पास कोई वैज्ञानिक इतिहास दृष्टि नहीं थी..... और कामायनी लिखने में प्रसाद जी का उद्देश्य वेद कालीन जीवन–चित्रण नहीं है।''[2] मुक्तिबोध के अनुसार ऐतिहासिक कथानक का आधार लेने के बावजूद प्रसाद ने कामायनी में अनेक समसामयिक प्रश्नों को भी उठाया है। संभवतः इसीलिए प्रसाद को फैंटेसी शिल्प का सहारा लेना पड़ा है। उनके अनुसार प्रसाद ने कामायनी में एक जीवन समस्या का चित्रण किया है जो वस्तुतः व्यक्तिवाद की समस्या है। उनका कथन है–''जीवन समस्या व्यक्तिवाद की समस्या है, जो एक विशेष समाज और काल में विशेष रूप और प्रकार से उपस्थित हो सकती है। उस समस्या को प्रसाद जी के व्यक्तित्व से मिलाकर देखना उचित ही है, क्योंकि कामायनी वस्तुतः एक आत्मपरक काव्य है।''[3]

उपर्युक्त कथन की अंतिम पंक्ति कामायनी के संदर्भ में एक अन्य महत्वपूर्ण स्थापना करती है कि कामायनी आत्मपरक काव्य है। मुक्तिबोध के अनुसार पूँजीवाद के उत्थान के साथ ही साथ नए किस्म का व्यक्तिवाद भी विकसित होना प्रारंभ हुआ इस संदर्भ में मुक्तिबोध कामायनी की निम्न पंक्तियों को उद्धृत करते हैं–

"यह क्या मधुर स्वप्न सी झिलमिल सदय हृदय में अधिक अधीर
व्याकुलता सी व्यक्त हो रही आशा बनकर प्राण समीर
यह कितनी स्पृहणीय बन गई,मधुर जागरण की छविमान।
स्मिति की लहरों से उठती है, नाच रही ज्यों मधुमय तान।

.....

मैं हूँ, यह वरदान सदृश क्यों लगा गूंजने कानों में।
मैं भी कहने लगा, श्मैं रहूँ शाश्वत नभ के गानों में।''[4]

मुक्तिबोध के अनुसार जयशंकर प्रसाद ही नहीं अपितु उस पूरे युग के साहित्य में जिसे हम छायावाद कहते हैंय उपर्युक्त प्रकृति की व्यक्तिवादी चेतना प्रस्फुटित हो रही थी। और न केवल प्रस्फुटित हो रही थी बल्कि इस काल की प्रधान प्रवृत्ति बनने की ओर अग्रसर थी।

आगे के अध्याय में मुक्तिबोध कामायनी के प्रतीक विधान पर चर्चा करते हैं। उनके अनुसार मनु, श्रद्धा, इड़ा इत्यादि सभी पात्र प्रतीकों के रूप में उपस्थित हुए हैं। वे मनु की व्याख्या नष्ट हो रहे सामंतवाद के प्रतिनिधि के रूप में करते हैं जिसके चरित्र में विलासिता, अहंकार, उच्छृंखलता, आत्मग्रस्तता और पाखंड आदि सामंती संस्कार अपनी जड़े जमाये हुए हैं। मुक्तिबोध मनु के चरित्र का गहरा विश्लेषण करते हैं और उसके चरित्र की उन कमियों को उजागर करते हैं जिन पर प्रायः चर्चा अभी तक नहीं हुई थी। वे उसे

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2024

eISSN- 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 01, Issue 01, October 2024

अंहंग्रस्त, व्यक्तिवादी, विलासी, अतिचारी तथा धृष्ट नायक की श्रेणी में रखते हैं। यहाँ तक की उसके लिए टुच्चा जैसे विशेषण का भी उपयोग करते हैं। इसके साथ ही जयशंकर प्रसाद द्वारा श्रद्धा के चरित्र का जो महिमा मंडन किया गया है मुक्तिबोध ने इसकी भी तीखी आलोचना की है। उदाहरण के लिए वे कामायनी की पंक्तियों– 'मैं लोक अग्नि में तप नितांत, आहुति प्रसन्न देती प्रशांत' को उद्धृत करते हुए कहते हैं कि श्रद्धा भला किस लोक अग्नि में तप रही थी। इसी प्रकार प्रसाद द्वारा की गई इड़ा की अकारण निंदा को वह प्रसाद जी का बुद्धि विरोधी कृत्य मानते हैं। और इसके लिए उनकी आलोचना करते हैं। जयशंकर प्रसाद द्वारा भौतिकवाद तथा यंत्रीकरण का किया गया विरोध भी मुक्तिबोध को रास नहीं आता तथा वह इसे प्रसाद का विज्ञान विरोधी एवं प्रगति विरोधी दृष्टिकोण मानते हैं। उनका यह भी कहना है कि अंतर्मुख व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों और सामाजिक यथार्थ के टकराव ने प्रसाद जी के सम्मुख अनेक प्रश्न व समस्याएँ खड़े किए, किंतु जयशंकर प्रसाद ने उनका कोई व्यावहारिक हल ढूंढने के बजाय अभेदानुभूतिशील, अद्वैतवाद का सहारा लिया। मुक्तिबोध इसे प्रसाद द्वारा प्रस्तुत एक कृत्रिम समाधान बताते हैं।

यहाँ मुक्तिबोध जयशंकर प्रसाद के सभ्यता समीक्षा संबंधी दृष्टिकोण की विशेषता बताते हुए कहते हैं कि यह प्रगतिशील के साथ–साथ प्रतिक्रियावादी भी है। वर्ग भेद का विरोध तथा शासक वर्ग की जन विरोधी दमनकारी नीतियों की प्रसाद द्वारा की गई भर्त्सना को वह उनका प्रगतिशील दृष्टिकोण मानते हैं। तथा वर्ग हीन सामंजस्य और सामरस्य के आदर्शवादी विचार को मुक्तिबोध प्रसाद का प्रतिक्रियावादी विचार बताते हैं।

इस प्रकार मुक्तिबोध ने कामायनी की समीक्षा के क्रम में तमाम स्थापित मूल्य और मान्यताओं का खंडन करके एक नई आलोचकीय दृष्टि प्रस्तुत की है। किन्तु अनेक स्थलों पर वह कामायनी की समीक्षा को एक अतिवाद से निकाल कर भी दूसरे अतिवाद में उलझा देते हैं। कामायनी के संदर्भ मुक्तिबोध द्वारा प्रस्तुत अनेक स्थापनाओं का उनके समकालीन एवं परवर्ती अनेक समीक्षकों द्वारा खंडन किया गया है ।कामायनी कि ऐतिहासिकता के संदर्भ में आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी तथा डॉ. नगेन्द्र के मत मुक्तिबोध के मत के विपरीत हैं। इस संबंध में डॉ. नगेन्द्र का कथन है–"... इतिहास का वृत्त उसकी वर्तमान अवधारणा से भिन्न अत्यंत पुराकाल की घटनाओं में फैला हुआ है, जिसके अभिलेख हमें प्राचीन अनुश्रुतियों में, भारत के संदर्भ में वैदिक वांगमय तथा पुराण आदि में मिलते हैं।..... सृष्टि विकास की इन प्राचीन घटनाओं को निराधार या निस्सार दंत कथा अथवा काल्पनिक आख्यान मात्र नहीं मानना चाहिए। उनके अंतस में वास्तविक ऐतिहासिक तत्व विद्यमान हैं।"[5]

वस्तुतः कामायनी के मूल्यांकन में मुक्तिबोध द्वारा हुई भूलें भारतीय इतिहास और संस्कृति को समझने में उनके द्वारा की गई भूल का उप–उत्पाद मात्र है। मुक्तिबोध की समस्या यह है कि वह एक आध्यात्मिक कृ ति का मूल्यांकन निरी भौतिकवादी वैचारिकी के आधार पर करते हैं। और अपनी मार्क्सवादी विचारधारा को त्रुटि रहित और अंतिम सत्य के रूप में स्वीकार कर लेते हैं। यह सत्य है कि मार्क्सवाद ने मानवीय समता और मानव हितों को सर्वोपरि रखा किंतु इस विचारधारा की भी अपनी सीमाएं हैं। उदाहरण के लिए मनुष्य और उसके सुखों को ही अंतिम मान लेने के कारण प्रकृति इसकी विचार सीमा से बाहर है। जयशंकर प्रसाद ने अति बौद्धिकता, अतियांत्रिकता और अतिभौतिकता के जिन खतरों की ओर संकेत किया था, उनके दुष्प्रभाव आज देखने को मिल रहे हैं। मुक्तिबोध प्रसाद की इस दूरगामी सोच को समझने में शायद असफल रहे हैं ।इसीलिए वह प्रसाद और कामायनी को बुद्धि विरोधी और यंत्र विरोधी सिद्ध कर देते हैं। किसी

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2024

eISSN- 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 01, Issue 01, October 2024

जंगल के तपस्वी द्वारा जनसामान्य को जीवन की उचित दिशा का पथ निर्देशन करना यह सबसे बड़ी जन सेवा है।

मुक्तिबोध द्वारा की गई कामायनी की समीक्षा के संदर्भ में डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी का एक कथन यहाँ उद्धृत करना प्रासंगिक होगा। चतुर्वेदी जी ने मुक्तिबोध की रचना श्कामायनी एक पुनर्विचार को कामायनी के पुनर्मूल्यांकन का पहला प्रयास बताते हुए कहा है–''मुक्तिबोध की यह समीक्षा निश्चय ही विचारोत्तेजक है तथा और भी अधिक सार्थक हो पाती यदि वे अपने मार्क्सवादी चिंतन को यहाँ अस्थान पर स्थापित करने का आग्रह न करते। यह वैसा ही है जैसा कि कामायनी को शैवागम के माध्यम से समझना।''[6]

अंततः हम कह सकते हैं कि तमाम वैचारिक असहमतियों के बावजूद जयशंकर प्रसाद और कामायनी के प्रति मुक्तिबोध का आकर्षण दिखाई पड़ता है। श्री मधुरेश अपनी पुस्तक हिंदी आलोचना का विकास में लिखते हैं–''कामायनी एक पुनर्विचार इसका उदाहरण भी है कि अपनी वैचारिक असहमतियों को भी कितनी गंभीर तैयारी और आश्चर्यजनक संयम के साथ व्यक्त किया जा सकता है।''[7]

अंततः हम कह सकते हैं कि कामायनी के पुनर्मूल्यांकन की जिस परंपरा का आरंभ मुक्तिबोध ने किया वह कामायनी की समीक्षा को एक नई दिशा प्रदान करती है।

संदर्भ सूची–

1– गजानन माधव मुक्तिबोध, कामायनी एक पुनर्विचार, पृष्ठ–8
2– वही, पृष्ठ–15,16
3– वही, पृष्ठ –15,16
4– जयशंकर प्रसाद,कामायनी, पृष्ठ– 8
5– डॉ. नगेन्द्र,प्रसाद और कामायनी मूल्यांकन का प्रश्न, पृष्ठ –16
6– डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, कामायनी का पुनर्मूल्यांकन, पृष्ठ–16
7– मधुरेश, हिन्दी आलोचना का विकास , पृष्ठ –169

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2024